70 P
397
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 397

1815/10/21

(T)
1811
891.431
Sh 239

* वन्देमातरम् *

# गान्धी-गीतांजलि

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक


पं० घासीराम शर्म्मा, बुकसेलर

मुरादाबाद



छोटेलाल जैन के प्रबन्ध से

शर्मा मैशीन प्रिंटिङ्ग प्रेस मुरादाबाद में मुद्रित।

प्रथमवार १५०० ]   १९३०   [ मूल्य =)



321/75

891.431
Sh23G
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 397
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्

# गान्धी गीतांजलि

## वन्देमातरम्

क़ौम के ख़ादिम की है, जागीर वन्देमातरम् ।
है वतन के वास्ते, अक्सीर वन्देमातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर, बन्दूक़ पर अपनी ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का, तीर वन्देमातरम् ॥
क़त्ल की हम को न दें धमकी हमारे सब्र से ।
तेग़ पर हो जायगा, तहरीर वन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे, जब कि क़िस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राक़िमे तहरीर वन्देमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लादने, गर क़त्लपर बांधी कमर ।
रोक देगा दूर से, शमशीर वन्देमातरम ॥
जुल्म से गर करदिया, ख़ामोश मुझको देखना ।
बोल उठेगी मेरी, तस्वीर वन्देमातरम् ॥
सर ज़मीं इङ्गलेण्डकी, हिलजायगी दो रोज़में ।
गर दिखाये गी कभी, तासीर वन्देमातरम् ॥
सन्तरी भी मुन्तज़िब थे, जबकि हर झंकार पर ।
बोलती थी जेल में, ज़ञ्जीर वन्देमातरम् ॥

## भक्त-कामना ।

जगदीश ! यह विनय है, जब प्राण तन से निकले ।
प्रिय देश रटते रटते, यह प्राण तन से निकले ॥
भारत बसुन्धरा पर सुख शान्ति संयुता पर ।
शुचि शस्य-श्यामलता पर यह प्राण तन से निकले ॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते ।
निज देश व्याधि हरते, यह प्राण तन से निकले ॥
भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र के निकट हो ।
श्री जानह्वी का तट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
उद्योग सत्य सुख हो, आलस्य हो न दुःख हो ।
सबका प्रसन्न मुख हो, तब प्राण तन से निकले ॥
देशोपकार करके, मन मातृ-भक्ति भरके ।
जय जय स्वदेश रटते, यह प्राण तन से निकले ॥

———

## शहीद गर्जना ।

( ले०—काकोरी शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' )

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना ।
आजाद होगा २ आता है वह जमाना ॥
खूँ खोलने लगा है हिन्दुस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जाँ निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

परवाह ही अब किसे है जेलो दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

---

## सर फ़रोशी की तमन्ना।

( ले०—'बिस्मिल' )

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाजुये क़ातिल में है॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मञ्जिल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तलमें क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है।
अब न अगले बलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जानेकी हसरत अब दिले'बिस्मिल'में है॥

---

## पुष्प-हृदय।

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूँ, हारमें ललचाऊँ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डाला जाऊँ।
चाह नहीं है देवोंके सिर चढ़ूँ, भाग्य पर इतराऊँ॥

मुझे तोड़कर हे बनमाली।
उस पथ में देना तू फेंक ॥
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

---

## देशभक्त वीर की गर्जना।

तेरी ज़ुल्म की हस्ती को ऐ ज़ालिम मिटा देंगे।
ज़ुबाँ से जो निकालेंगे वह करके दिखा देंगे ॥
भड़क उठेगी जब सीनये सोज़ा में मेरे आतिश
तो हम यह सर्द आह भर कर तुझे ज़ालिम जला देंगे॥
हमारे आह के नाले को तुम बेसूद मत समझो
जो हम रोने पै आयेंगे तो एक दरया बहा देंगे ॥
हमारे सामने सख्ती है क्या उन जेलखानों की।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे ॥
हमारी फाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी।
निशाँ तेरा मिटा देंगे तुझे जब बददुआ देंगे ॥
हज़ारों देश भक्त अब कौमी परवान हैं ज़िन्दा में।
हम उनके वास्ते सब माल ज़र अपना लुटा देंगे ॥
कुछ इसमें राज़ था मुद्दत से जो ख़ामोश बैठे थे।
हम अब करने पै आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे ॥
अगर कुछ भेंट आज़ादी की देवी हमसे माँगेगी।
समझ कर हम जहे किस्मत सब अपना सर चढ़ा देंगे॥
नहीं मंजूर अब इज्ज़त हमें सरमायेदारों की।
बना कर शाह कृति को सिंहासन पर बिठा देंगे ॥

---

## चिनगारियां

होना मत भयभीत मृत्यु से, कायरता है दुःख है।
हँस हँस चढ़ना बलि-वेदी पर निर्भयता है सुख है॥
क्यों होते भयभीत मृत्यु से आत्मा अजर, अमर है।
बलि-वेदि पर बढ़ो वीर! 'जयमाल' तुम्हारे गल है॥
'शिवा' प्रताप' समान देश पर शीश प्रसून चढ़ादो।
स्वतन्त्रता के अमर शहीदों में निज नाम लिखादो॥
प्राणों पर इतनी ममता और स्वतन्त्रता का सौदा।
बिना तेल के दीप जलने का यह कठिन मसौदा॥
मोती बिखराते वीतेगी जलती जीवन घड़ियाँ।
बिना चढ़ाये शीश नहीं टूटेंगी माँ की कड़ियाँ।
दुनिया में जीने का सबसे सुन्दर मधुर तकाज़ा।
ऐ शहीद! उठने दे अपना फूलों भरा जनाज़ा॥

———

## सफल जीवन।

जननी जन्म भूमि वेदी पर जो सर्वस्व चढ़ाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं॥
अत्याचार अनीति दबाते, दीन दुखी का हाथ बटाते।
स्वतन्त्रताका श्रोत बहाते, मातृभूमिकी लाज बचाते॥
जो बन्दी जाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं।
निर्वासन है चन्दन बनसा, कटि कोपीन विचित्र वरुणसा,
है ज़ञ्जीर सुमन-बन्धनसा, कारागृह है देव सदनसा।
वही स्वर्ग-सुख पाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं॥

———

## राष्ट्र पताका।

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा जीवन बलिदान करेंगे।
झण्डा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़कर है प्यारा।
तन मन धन इस पै वारा, जीवन कुरबान करेंगे॥
शूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे।
सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झण्डा नहीं तजेंगे॥
आओ झण्डा फहरावें, शुचि राष्ट्र भाव दर्शावें।
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिन्सा नहीं करेंगे॥
उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे।
विश्व विजयनी राष्ट्र पताका गौरव फहरायेंगे॥
सबसे ऊँची रहे न इसको नीचे कभी झुकायेंगे।
समराङ्गण में लाल लाड़िले लाखों बलि बलि जायेंगे॥
गूँजे स्वर संसार-सिन्धु में स्वतन्त्रता का नमोनमो।
राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमोनमो॥

---

## भावना।

मादरे हिन्द की तस्वीर हो सीने पै बनी।
बेड़ियां पैरों में हों और गले में कफनी॥
आज से शबे वफ़ा का यही जोहर होगा।
फ़र्श काँटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा॥
फूल हो जावेगा छाती पै जो पत्थर होगा।
क़ैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा॥
सन्तरी देख कर उस ज़ोब को शरमायेंगे।
गीत ज़ंजीर की झनकार पै हम गायेंगे॥
दिल तड़पता है कि स्वराज का पैग़ाम मिले।

कल मिले आज मिले सुबह मिले शाम मिले।
हुक्म हाकिम है फ़रियाद ज़बानी रुकजाये॥
पर यह मुमकिन नहीं यह जोश जवानी रुक जाये।
हों ख़बरदार जिन्होंने यह अज़ीयत दी है॥
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है॥

---

## वीरोद्गगार।

माँ मैं जाऊँ कारागार।
बलि हो जाऊँ तेरे कारण, चलूँ विषम कृपाण की धार॥
पहन हाथ में सुन्दर कड़ियां, गान तुम्हारा ही करते।
बनूँ पथिक न्यायालय का तब ध्यान हृदय में ही धरते॥
प्राण दण्ड की आज्ञा पाकर चित्त प्रसन्न मय हो जावे।
देशोन्मत्त नश्वर शरीर का सदुपयोग अब हो जावे॥
जन्म दिया था जिस कारण से कारण को फिर हल करदूं।
रखकर लाज तुम्हारी माता! तेरे आगे सर धर दूं॥

---

## मन तरङ्ग।

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है।
करें आजाद भारत को यही एक धुन समाई है॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है।
करें बरबाद हम उनको कि जिनसे दुश्मनाई है॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना।
मिटेंगे हम मिटा कर के शपथ हमने यह खाई है॥
है क्या शै जेल और फाँसी डराते हो हमें जिनसे।
कटें आदर्श पर तिल २ न वह भी दुखदाई है॥
करो जुलमो सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं॥

## शहीदों का सन्देश ।

दिन खून का हमारे, प्यारो ! न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हम पर आँसू बहाते जाना ॥
सय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग़ में हम ।
सूनी पड़ी कब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होती है आज होली ।
बहते हमारे रङ्ग में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम क़ब्र में पड़े हैं ।
दो बूँद आँसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

---

## वीर जितेन्द्र की भावना ।

फ़ाक़े करेंगे भूख के सदमे उठायेंगे ।
रोटी ख़राब जेल की हर्गिज़ न खायेंगे ॥
दारोरसन से डरके न बुज़दिल कहायेंगे ।
मर जायेंगे क़दम को न पीछे हटायेंगे ॥
हम ज़ुल्म सहके ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥
बैलों की तरह घासकी सब्ज़ी न खायेंगे ।
कूटेंगे न हम मूँज न चक्की चलायेंगे ॥
बन्दे बला में फँसके न गरदन झुकायेंगे ।
मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे ॥
हम ज़ुल्म सहके ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे॥
कुर्बानियों का मुल्क को रस्ता दिखायेंगे।
मर मरके अपनी कौमको ज़िंदा बनायेंगे॥

हम ज़ुल्म सह के ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे।

———

## बलिदान आह्वान।

मेरी जाँ न रहे मेरा सर न रहे, सामान रहे न ये साज़ रहे।
फ़क़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे, माता के सर पर ताज रहे॥
पेशानीमें सोहे तिलक जिसकी, औ गोदमें गान्धी विराज रहे।
न ये दाग़ बदन में सुफेदरहे, न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे॥
मेरे हिन्दु मुसलमाँ एक रहें, भाई भाई सा रस्मो रिवाज रहे।
मेरे वेद पुराण कुरान रहे, मेरी पूजा सन्ध्या नमाज़ रहे॥
मेरी टूटी मँढैया में राज रहे, कोई ग़ैर न दस्तन्दाज़ रहे।
मेरी बीनके तार मिले हों सभी एक भीनी मधुर आवाज़रहे॥
ये किसान मेरे खुशहाल रहें पूरी हो फ़सल सुख साज़ रहे।
मेरे बच्चे वतन पर निसार रहें, मेरी माँ बहिना में लाज रहे॥
मेरी गाय रहे मेरे बैल रहें, घर घर में भरा नित नाज रहे।
घी दूध की नदियाँ बहती रहें, हरसू आनन्द स्वराज्य रहे॥
शर्मा की है चाह खुदाकी क़सम मेरे बाद बफ़ात ये याद रहे।
गाढ़े का क़फ़न हो मुझपै पड़ा बन्देमातरम् अल्फ़ाज रहे।

———

## अलीपुर बम केस के अभियुक्त ।

( श्री ओ३म्प्रकाश जी के कालेपानी जाते समय के
उद्गार जिसको श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'
कालकोठरी के अन्दर गाया करते थे । )

हैफ़ ज़िक्षपे कि हम तैयार थे मर जाने को ।
जीते जी हमसे छुड़ाया उसी काशाने को ॥
आसमाँ क्या यही बाकी था गज़ब ढाने को ।
लाके गुर्बत में जो रक्खा हमें तड़फाने को ॥
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को ॥ १ ॥
फिर न गुलशन में हमें लावेगा सैयाद कभी ।
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फरयाद कभी ॥
याद आयेगा बले यह दिले नाशाद कभी ।
हम भी इस बाग में थे कैद से आज़ाद कभी ॥
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को ॥ २ ॥
दिल फ़िदा करते हैं कुर्बान जिगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता की नजर करते हैं ॥
ख़ाने वीरान कहाँ देखिये घर करते हैं ।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं ॥
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को ॥ ३ ॥
देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें ।
मादरे हिन्द के अब भाग खुलें या फूटें ॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूजें कूटें ।
आप याँ ऐश से दिन रात बहारें लूटें ॥
क्यों न तरजीह दें इस जीने पै मर जाने को ॥ ४ ॥
कोई माता की उमीदों पै न डाले पानी ।

ज़िन्दगी भर को हमें भेज दे कालेपानी ॥
मुँह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी।
आबे खञ्जर का पिला करके दुआ ले पानी ॥
भर क्यों न जायें हम इस उम्र के पैमाने को ॥ ५ ॥
हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर।
हमको भी पाला था माँ बाप ने दुःख सहकर ॥
वक्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कहकर।
गोद में आँसू कभी टपके जा रुख से बहकर ॥
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ॥ ६ ॥
देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में।
आती है याद अब चितौड़ के गढ़ की क़समें ॥
सरफरोशी की अदा होती है यों ही रसमें।
भाई ख़ञ्जर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
रहते तैयार चिताओं में जल जाने को ॥ ७ ॥
नौजवानो! जो तबीअत में तुम्हारी खटके।
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ॥
आपके अज्वे बदन होवें जुदा कट कट के।
और सद चाक हो माता का कलेजा फटके ॥
पर न माथे पर शिकन आये क़सम खाने को ॥ ८ ॥
अपनी किस्मतमें अज़लसे ही सितम रक्खा था।
रंज रक्खा था महन रक्खा था ग़म रक्खा था ॥
किसको परवाहथी और किसमें यह दम रक्खाथा।
हमने जब वादिये गुरबत में क़दम रक्खा ॥
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ॥ ९ ॥
अपना कुछ ग़म नहीं लेकिन यह ख़्याल आता है।
मादरे हिन्द पै कबतक यह ज़वाल आता है ॥

देश आज़ादी का कब हिन्द में ख़्याल आता है।
क़ौम अपनी पै तो रो रो के मलाल आता है॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को॥ १० ॥

मैकदा किसका है यह जामे सबू किसका है।
वार किसका है मेरी जाँ यह गलू किसका है॥
जो बहे क़ौम की ख़ातिर वह लहू किसका है।
आसमाँ साफ़ बतादे तू अदू किसका है॥
क्यों नये रङ्ग बदलता है तू तड़फाने को॥ ११ ॥

दर्दमन्दों से मुसीबत की हलावत पूछो!
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो॥
चश्मे मुश्ताक से कुछ दीद की हसरत पूछो।
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को॥ १२ ॥

बात तो जब है कि इस बात की ज़िद ठानें।
देश के वास्ते कुर्बान करें सब जानें॥
लाख समझाये कोई एक न उसकी मानें।
कहता है खून से मत अपना गरेबाँ सानें॥
नासहा आग लगे तेरे इस समझाने को॥ १३ ॥

न मयस्सर हुआ राहत में कभी मेल हमें।
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें॥
एक दिन को भी न मंज़ूर हुई बेल हमें।
याद आयेगा अलीपुर का बहुत जेल हमें॥
लोग तो भूल ही जायँगे इस अफ़साने को॥ १४ ॥

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली।
एक होती है फ़क़ीरों की हमेशा बोली॥

खून से फाग रचायेगी हमारी टोली।
जब से बङ्गाल में खेलें हैं कन्हैया होली॥
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को॥ १५॥
नौजवानो यही मौका है उठो खुल खेलो।
ख़िदमते क़ौम में जो आये बला तुम झेलो॥
देशके सदके में माता को जवानी देलो।
फिर मिलेंगी न यह माता को दुआयें लेलो॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को॥ १६॥

---

## वीर हृदय।

देश की ख़ातिर मेरी दुनियाँ में गर तौक़ीर हो।
हाथों में हों हथकड़ी पावों पड़ी ज़ंजीर हो॥
आँखों की खातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो।
इससे भी बढ़ कर कोई दुनिया में गर तौक़ीर हो॥
मरकर भी मेरी जान पर जहमत बिला ताख़ीर हो।
मेरी खातिर खास कर दोजख नया तामीर हो॥
सूली मिले फाँसी मिले फिर मौत दामनगीर हो।
मंजूर हो मंजूर हो, मंजूर हो मंजूर हो॥

---

## असहयोग।

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी।
गर क़ौम असहयोग पर तय्यार न होगी॥
बन जायेंगे हर शहर में जलियाने वाले बाग।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी॥
ये जेल खाने टूट कर अब और बनेंगे।
इस में तमाम क़ौम गिरफ्तार न होगी॥

सौदाई हैं हम वतन के लोहे की बेड़ियाँ।
सोने के ज़ेवरों में भी झंकार न होगी॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे।
इन हाथों में बन्दूक़ या तलवार न होगी॥
कुछ मिल गये हैं ऐसे मुसलमान व हिन्दु।
बस अब तमीज़ तस्वीह व जिन्नार न होगी॥
हम ऐसी हकूमत को मिटा देवेंगे बिल्कुल।
गम में हमारे जो कभी गमख्वार न होगी॥

———

## स्वतन्त्रता-पूजन।

अधीन होकर बुरा है जीना, मरना है अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधाको तजकर ज़हरका प्याला है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
पड़ी हों हाथोंमें हथकड़ी यदि तो स्वर्गके सुखसे लाभक्या है।
नरकके दुखमें निवास निशदिन है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
जो दास होकर मिलें भवनमें सौस्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब।
सदैव उपवास करके बनमें विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
मिलें उपाधियाँ मान पदवी जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब।
घृणाके गड्ढे में होके व्याकुल उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

———

## अच्छे दिन आने वाले हैं।

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीन दिन अच्छे आने वाले हैं।
आज़ादी का सन्देश तुझे अब जल्द सुनाने वाले हैं॥
माँ तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ जईफी में।
मायूस न हो मग़रूरों को हम अब मज़ा चखाने वाले हैं॥
( कमज़ोर हैं और मुफ़लिस हैं हम गो कुञ्ज क़फ़समें बेकस हैं)

बेकस हैं लाख मगर माता हम आफत के पर काले हैं ॥
हिन्दु और मुस्लिम मिलकरके चाहें जो हम कर सकते हैं।
चर्खे कुहन हुश्यार हो तू पुरशोर हमारे नाले हैं ॥
मेरी रूह को करना कैद क़त्ल इम्कान से बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़ुबाँ पर ताले हैं ॥
मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब महकूम जो हैं होंगे हाकिम।
सदा एकसा वक्त रहा किसका कुदरत के तौर निराले हैं ॥
गाँधी ने तरक ओ तआऊन का कैसा मंत्र चलाया है।
लरज़ा है जिससे अर्ज़ समाँ सरकार की जान के लाले हैं ॥

---

## नौजवानों की तमन्ना।

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते २ ।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते २ ॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते २ ॥
ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकरशाही ।
उसकी यह बदचाल मिटा जायेंगे मरते २ ॥
जेलखानों की भी खुश होके बढ़ायें रौनक।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते २ ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर करदें।
सबक भारत को पढ़ा जायँगे मरते मरते ॥
हैं तो ना चीज मगर इतनी ज़ुर्रत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते २ ॥
भगतसिंह दत्त दयानन्द तिलक गांधी का।
सबको फरमान सुना जायेंगे मरते २ ॥

---

## शहीदों के खूं का असर।

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं।
बहा देंगे खूँ की नहर देख लेना॥
झुका देंगे गर्दन को हम ज़ेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदग़रज़ गोली चलाते हैं हम पर।
तो कदमों में उनका ही सर देख लेना॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूने जिगर से।
वह होगा कभी बार वर देख लेना॥
किनारे पै आये भंवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना॥
बलायें यह जायेंगी खुद सर नगूँ हो।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
ख़बर यह एक दिन छपेगी देख लेना॥

———

## आवाहन।

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखा देंगे।
आज़ाद ही होंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डटके कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बे शस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्खे का।
चर्खे से ज़मी को हम तो चर्ख़ गुँजा देंगे॥

परवाह नहीं कुछ दम की, गमकी नहीं मातम को ।
है जान हथेली पर यक पल में गंवा देंगे ॥
उफ़ तक भी ज़ुबाँ से हम हरगिज न निकालेंगे ।
तुम तलवार उठाओगे हम सर को झुका देंगे ॥
सीखा नया हमने लड़ने का यह तरीक़ा ।
चलवाओ गनमशीने हम सीना अड़ा देंगे ॥
दिलेबादा हमें फाँसी ऐलान दे कहते हैं ।
खूँ से ही शहीदों के हम फौज बना देंगे ॥
"मुसाफिर" अन्डमन के जो तू ने बनाये ज़ालिम ।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे ॥

---

## फरियाद बुलबुल ।

आबाद है जिस दिन से सैयाद चमन में ।
बुलबुल तो कहाँ गुल भी है बरबाद चमन में ॥
हर वक्त लगी रहती में सैयाद की आँखें ।
बुलबुल तो फिरा करती हैं आज़ाद चमन में ॥
गुल हाय शगुफ्ता ने अजब शान निकाली ।
होने को है बुलबुल कोई बर्बाद चमन में ॥
सैयाद उकाजू है तो जल्लाद है गुल्चीं ।
सुनता नहीं है कोई भी फरियाद चमन में ॥
नाशाद उसी दिन से है आगाज़ खिज़ाँ का ।
जिस दिन से मकीं है सितम ईजाद चमन में ॥

---

## उम्मीद की झलक।

अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियाँ होगा॥
चखायेंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलचीं को।
बहार आजायगी उस दिन जब अपना बाग़बाँ होगा॥
वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहाँ और तू कहाँ होगा॥
यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खञ्जरे क़ातिल।
बता कब फैसला उनके हमारे दर्मियाँ होगा॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा॥
कभी वह दिन भी आयगा कि जब स्वराज्य देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मीं होगी जब अपना आस्मां होगा॥

---

## वीर गर्जना।

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना॥
मत बुज़दिली का हरगिज़ पास तुम दो फटकने।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥
स्वतन्त्रता देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना॥

दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक़ करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिलमें झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा ।
दो दिनकी जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

---

## तराना फ़लक़ ।

बाग़ से सर सर का झोंका आशयाना लेगया ।
अन्दलीबों को कफ़स में आबोदाना लेगया ॥
कुछ गुलो गुलचीका शिकवा बुलबुले भारत न कर ।
तुझको पिंजरा में है तेरा चहचहाना लेगया ॥
एक सौ चवालीस की तोहमत का झगड़ा है अबस ।
जेल में तुझ को तेरा मुल्की तराना लेगया ॥
देशभक्ति की सज़ा देनी उसे मंजूर थी ।
ज़ाहिर करके बग़ावत का बहाना लेगया ॥
क्यों घटा अदबार की छाई है अहले हिन्द पर ।
छीन कर यूरुप है सब मालो खज़ाना लेगया ॥
पूछते क्या हो ज़मींदारों की दौलत क्या हुई ।
कुछ वकील और कुछ नशा कुछ मालखाना लेगया ॥
शूमिये क़िस्मत से इक दाने को हम तरसा किये ।
झोलियाँ भर कर अगरना कुल ज़माना ले गया ॥

---

## स्वदेश प्रेम ।

सेवा में तेरी भारत ! तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझको बनायेंगे हम ॥
तुझसे जिये तुझी ने पालन किया हमारा ।
उपकार जितना करता क्या २ गिनायेंगे हम ॥
तेरे ऋणों का बोझा सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम ॥
तेरे लिये जियेंगे तेरे लिये मरेंगे
आखिर स्वतन्त्र करके तुझको दिखायेंगे हम ॥

---

## कर्म्म युग ।

आगया है कर्म्म-युग कुछ कर्म्म करना सीखलो ।
देश पर अरु जाति पर हँस हँस के मरना सीखलो ॥
मारने का नाम मतलो खुद आप मरना सीखलो
मिस्ले आयर्लैण्ड दबकर फिर उभरना सीखलो ॥
पार यदि होना तुम्हें परतन्त्रता दुःख सिन्धु से ।
तैर करके रक्त सागर से उतरना सीखलो ॥
तीर्थ यात्रा के लिये दिन रात उत्साहित रहो ।
कृष्ण जन्म - स्थान में निर्भय विचरना सीखलो ॥
देखना है दृश्य भारतवर्ष में यदि स्वर्ग का ।
देश का तो प्राण पण से दुःख हरना सीखलो ॥

---

## गाना।

यह आरज़ू है मेरी भारत पे वार करदूं।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार करदूं॥
ऐसी हवा चलाऊँ जायें यह दिन खिजां के।
भारत के गुलसितां में मौसम बहार करदूं॥
ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे।
भारत की उन्नति की नावों को पार करदूं॥
यह आरती गुलामी की कौम के बदन पर।
पहनी जो मुद्दतों से ये तार तार करदूं॥॥
ऐसी करूँ तपस्या स्वराज्य लेकर छोड़ूं।
मिट जाये बेकरारी दूर इन्तजार करदूं॥

---

## शहीदों के लाशे के प्रति।

भाइयो नहीं है लाशा यह बे कफ़न तुम्हारा।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा॥
दिन आज का यह होगा त्यौहार एक कौमी।
बैकुण्ठ को हुआ है इस दिन गमन तुम्हारा॥
ज़ाया लहू तुम्हारा जाने का यह नहीं है।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा॥
खुद मरके जिस्म क़ौमी में तुमने जान डाली।
जाति का है जीवन गोया मरण तुम्हारा॥
सब भक्तियों से बढ़कर उत्तम है देशभक्ति।
छूटा है बाद मुद्दत आवागमन तुम्हारा॥
इतिहास में रहेंगी कुर्बानियाँ तुम्हारी।
तुम पर फ़ख्र करेगा प्यारा वतन तुम्हारा॥

—*—

## बलिदान ।

चाहती है माता बलिदान, जवानों उठो हिन्द सन्तान ।
चाहती है माता०
हँसते हुए फूल से आकर, शीश झुकादो माँ के पग पर ।
कटता हो कट जाने दो सर, तनिक न हो हैरान ॥
जवानों उठो हिंद०
सोने वालो ! उठो कड़ककर, जागे हुए बढ़ो वेदी पर ।
बूढ़ा हो नारी हो या नर हो, सब को है आह्वान ॥
जवानों उठो हिंद०
हो चमार भङ्गी या पासी विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्री हो उपवासी सबका भाग समान ॥
जवानों उठो हिंद०
उठो अपढ़ मूरख विद्वानों हिन्दु मुसलिम औ किरस्तानों ।
जैन, पारसी, सिक्ख, महानों प्यारी माँ के प्रान ॥
जवानों उठो हिंद०
ओ छात्रो ! भावी अधिकारी, उठो २ निद्रित व्यौपारी ।
उठो मजूरो दीन भिखारी दुखी दरिद्र किसान ॥
जवानों उठो हिंद०
हो गुलाम कैसा ही दागी वर्त्तमान शासन अनुरागी ।
नरम गरम वैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥
जवानों उठो हिंद०
स्वार्थ और मतभेद मिटाओ, बैर फूट को दूर भगाओ ।
फहराओ तुम आज हिन्द में इक जातीय निशान ॥
जवानों उठो हिंद०
फांसी चढ़ो जेल में जाओ, भय वश कभी न देश भुलाओ ।
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ, स्वतन्त्रता का गान ॥

जवानों उठो हिन्द०

पूरन करो यज्ञ माता का, ज्यों प्रताप अभिमानी बाँका।
ज्यों शिव सूर्य्य हिन्द गुरुता का जैसे तिलक महान्॥
जवानों उठो हिंद०

मीठी मगन भङ्कार सुखारी, गान्धी वीणा की अति प्यारी।
"माधव" मस्त उठो दिखलादो, कालों में है जान॥
जवानों उठो हिंद०

---

उतना ही वह उभरेगा जितना कि दबा देंगे।

ज़िन्दा हैं अगर ज़िन्दा, दुनिया को हिला देंगे।
मशरक़ का सिरा लेकर मग़रब से मिला देंगे॥
हम सीनये हस्ती में, अङ्गारा है अङ्गारा।
शोले भड़क उठेंगे झोंके जो हवा देंगे॥
मजदूर हो दहकाँ, या हिन्दु हो मुसलमां हो।
सब एक तो हो जाओ, फिर उनको दिखा देंगे॥
हम कौन हैं हम क्या हैं, हम कुछ भी नहीं लेकिन।
वक्त आने दो वक्त आने, फिर उनको दिखा देंगे॥
मज़दूर की फ़ितरत में, कुदरत ने लचक दी है।
उतना ही वह उभरेगा जितना कि दबा देंगे॥
मज़दूर के नालों से, आतिश भड़क उठेगी।
चलते हुए पानी में हम, आग लगा देंगे॥
तारीकिये ग़फ़लत में, हैं जो कि पड़े सोते।
यह नज़्म "सफ़ा" पढ़कर, हम उनको जगा देंगे॥

---

बोल्शेविक षड्यन्त्र मेरठ के अभियुक्तों का गान ।

क्या ख़ाक है तेरी जिन्दगानी,
उठ ग़रीब बे नवा ।
क्या है यह तूने दिल में ठानी,
रहे बंदा गुलाम अबदा ।
आ हम गुलामी अपनी छोड़ें,
हों आज़ाद और रिहा ।
बदले यह सारी दुनियां बदले,
जिसमें ज़ुल्म है ज़ोरो जफा ।
है यह ऊक्क हमारा आख़िरी
इस पर है फैसला ।

---

## गीत ।

सारे जहाँ के मज़लूमो उट्ठो कि वक्त आया ।
ऐ पेट के ग़ुलामों उठो कि वक्त आया ।
दुनियां के बदनसीबो उठो कि वक्त आया ।
रस्मो रिवाज सारे तोड़ो जहां के जितने ।
उठो गुलामी छोड़ो पैग़ाम नोह आया ॥
इन्साफ़ गर्जता है छोड़ेंगे लेकर बदला ।
दुनियां नई बसेगी सुनलो है यह सुनाया ।
फिर हो रहा है मेला अबसे नया ज़माना ।
सब कुछ उन्हींका होगा अबतक रहे जो साया ॥
उठो ग़रीब भाइयो अब कमर बांध निकालो ।
जंग आख़िरी लड़ो तुम फरमान यह है आया ।
ज़ुल्मो सितम हैं जितने उनको मिटाके एकदम ।
आराम से रहो तुम यह गीत हमने गाया ॥

हो गये हैं अपने घर में हैफ़ हम बेखानमाँ।

हमनशीं बतलायें क्या हम दर्दे दिल की दास्ताँ।
एक मुद्दत से है जोरे चर्ख के नाला नालाँकुनाँ॥
तिनके तिनके ले गया सैयाद चुनकर अपने घर।
और पत्तों को उड़ाकर ले गया बादे ख़िज़ाँ॥
साकिनाने गुलशने हस्ती मुकामे ग़ौर है।
हो गये हैं अपने घर में हैफ़ हम बेख़ानमाँ॥
हम असीरों की रिहाई की भी अब तदबीर हो।
हैं हमारी बेकसी पर ख़न्दाज़न अहले जहाँ॥
क्या करें हम रौनक़े बाग़े जहाँ को क्या करें।
अपना ही गुलज़ार है जब फ़र्क़ता रोज़े ख़िज़ां॥
नौजवानाने वतन हिम्मत ज़रा दरकार है।
फिर बसाना है हमें उजड़ा हुआ यह आशियां॥

———

## नौजवानों को चेतावनी।

हिम्मत करो जवानो आज़ादे वतन हो।
उफ़ आपके होते हुए बर्बाद वतन हो॥
अफ़सोस अहले दर्द में उल्फ़त की बू न हो।
नफ़रत का दौर दौरा हो नाशादे वतन हो॥
कोठी भरे हैं माल से बाज़ार पेट है।
पर क्या मज़ाल एक भी आज़ादे वतन हो॥
गान्धी के असूलों पर ही खद्दर की अशाअत।
इफ़लास मिटे क़ौम की इमदादे वतन हो॥
दुश्मन की क्या मज़ाल ज़रा आँख उठा सके।
तुम भीम बनो और यह फ़ौलाद वतन हो॥

जितेन्द्र शहीदे क़ौम की मग्फ़िरत की सदा है।
तुम क़ौम की तामीर में बुनियाद वतन हो॥
गुलचीं के दस्ते बुर्द से बरबादे चमन हो।
खूने जिगर से सींचलो आबादे वतन हो॥
बुलबुल की तरह गुल की मुहब्बत में जान दो।
यकविर्दे ज़ुबाँ देश हो फ़रियादे वतन हो॥
अहले नगर के वास्ते गर शीरीं वतन हो।
हर फ़र्द वतन क़ौम का फ़रहादे वतन हो॥

———

## जितेन्द्रदास गीत।

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी "दास की"।
दिल अगर हो तो सुनो दिल से कहानी दास की॥
फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की॥
शौक से दुनिया के लोगों को यहां कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की॥

————

## भजन।

बुज़दिलों ही को सदा मौत से डरते देखा।
गो के सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा॥
मौत से वीर को हमने न कभी डरते देखा।
तख़्तये मौत पै भी सदा खेल ही करते देखा॥
मौत जब एक दिन आना है तो डरना है क्या।
हम सदा खेल ही समझा कियेके मरना क्या है॥
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद।
हमारा क्या है अगर हम रहे रहे न रहे॥

## एक निर्वासित का विलाप।

परदेश में हैं हम दूर वतन ऐ चर्ख़ मुझे बरबाद न कर।
कुछ हद भी है रंज मुसीबतकी तू हमपै सितम जल्लाद न कर॥
आये हैं वतन को छोड़के हम घरबार के छुटनेका दिलपै है ग़म।
मारे हुए हैं तक़दीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥
हम हिन्द के रहने वाले हैं कुछ मुँह से न कहने वाले हैं।
दुःख दर्द के सहने वाले हैं तू हम पै सितम ईजाद न कर॥
ऐ 'शम्श' मुकद्दर सोता है रोने से भला क्या होता है।
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है परदेश में तू फ़रियाद न कर॥

—※—

झण्डा नहीं झुकेगा झण्डा नहीं झुकेगा।
भारत के लालने जब ऊपर इसे उड़ाया।
आज़ादी का सन्देश कुल मुल्क को सुनाया॥
जय जय का शोर इसके चारों तरफ से आया।
हर एक बाहया के दिल में यही समाया॥
झण्डा नहीं०
अपनी स्वतन्त्रता पर सर्वस्व वार देंगे।
घटने न देश का हम अपने विकार देंगे॥
क़ौमी निशान पर हम होने न वार देंगे।
दुश्मन को देखते ही बस यह पुकार देंगे॥
झण्डा नहीं०
कुर्बान तन है इस पर इस पर निसार मन है।
समझे हुये इसी को हम अपना धर्म धन है॥
साये में इसके हाज़िर सब अपने हम वतन हैं।
हिन्दू है या मुसलमाँ सिक्ख है या क्रिश्चियनहैं॥
झण्डा नहीं०

गद्दार भाग जायें वह अब मुँह न दिखायें
इज्जत गँवा रहे हैं तो अपनी वह गँवायें ॥
परवाह नहीं ज़रा भी आयें बलायें आयें ।
जितने उठा सकें वह फ़ितने यहाँ उठायें ॥
झण्डा नहीं०
साये में इसके हम सब एक जान होचुके हैं ।
आज़ादी के हमारी सामान हो चुके हैं ॥
इसके हज़ार हम पर अहसान हो चुके हैं ।
लाखों जवान इस पर कुर्बान हो चुके हैं ॥
झण्डा नहीं०
स्वाधीनता पताका आज़ादी का अमल है ।
प्राणों पै आ बनेगी किसको यहाँ यह ग़म है ।
दमख़म है किसमें ऐसा कर सकता कौन ख़म है ।
जबतककिजाँने जाँ है जबतक कि दममें दम है ॥
झण्डा नहीं०
छोड़ा है मौत का डर तो किससे अब डरेंगे ।
आगे बढ़े हैं अब क्या पीछे क़दम धरेंगे ॥
सीने पै गोली खाकर हरगिज़ न उफ़ करेंगे ।
झण्डे की तो यही हम कहते हुये मरेंगे ॥
झण्डा नहीं०

—※—

## गाना ।

देश की ख़ातिर मेरी दुनियाँ में यह तावीर हो ।
हाथ में हो हथकड़ी पैरों पड़ी ज़ंजीर हो ॥

सूली मिले फाँसी मिले या कोई भी तद्बीर हो।
पेटमें ख़ंजर दुधारा या जिगर में तीर हो॥
आँख खातिर तीर हो मिलता गले शमशीर हो।
मौत की रक्खी हुई आगे मेरे तसवीर हो॥
मरकर भी मेरी जान पर ज़हमत बिला तोक़ीर हो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो॥
ख़ासकर मेरे लिये दोज़ख़ नया तामीर हो
अलग़रज़ जो कुछ हो मुमकिन वह मेरी तहकीर हो॥
हो भयानक से भयानक भी मेरा आख़ीर हो।
देश की सेवा हो लेकिन एक मेरी तहशीर हो॥
इससे बढ़कर और दुनियाँ में अगर ताज़ीर हो
मंजूर हो! मंजूर हो!! मंजूर हो!!! मंजूर हो!!!!
मैं कहूंगा फिर भी अपने देश का शैदा हुआ।
फिर करूँगा काम दुनियाँ में अगर पैदा हुआ॥

—*—

## भजन।

हिन्द में आह चली उल्टी हवायें क्यों कर।
घिर के इफ़लास की आयी हैं घटायें क्या कर॥
खींचकर गल्ला जो ले जायें बिलायत वाले
फिर कहो भूख से हम जाँ न गवायें क्यों कर॥
है कभी ताऊन कभी अहले कभी हैजा है।
नहीं मालूम टलेंगी यह बलाये क्यों कर॥
क्या कमल जाने जो है गूंज में भौंरा के मज़ा।
मोरे तसलीम करें कालों की रायें क्यों कर॥

NATIO... 397 9.12.71 GOVT. ...IA

हम फ़लक फूँक के रखते हैं ज़मीं पै भी क़दम ।
आसमाँ सर पै उठायें तो उठायें क्यों कर ॥

———

## भजन ।

अब अहले हिन्द कहदो सब एक ज़ुबान होकर ।
हिन्दोस्तां रहेगा हिन्दोस्तान होकर ॥
आपस में हम रहेंगे जिस्म और जान बन कर ।
पर अब नहीं रहेंगे हिन्दी गुलाम बनकर ॥
अय नौ जवानों तुम पर इज़्ज़त का ताज होगा ।
भारत निवासियों को जिस दिन स्वराज्य होगा ॥
दुनियाँ के लोग हम पर मुतलक़ नहीं हँसेंगे ।
चालों में दूसरों की अब हम नहीं फँसेंगे ॥

———

## भजन ।

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एक बार हो जाये ।
हमारा राज्य भारत में बिना तलवार हो जाये ॥
वस्त्र बनने लगें सुन्दर, हमारे हिन्द में जिस दम ।
उसी दम मानचेस्टर का नरम बाजार हो जाये ॥
विदेशी वस्तु लेने से जभी हम हाथ धो बैठें ।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार हो जाये ॥
सुदर्शन चक्र चर्ख़े को अगर सब हाथ में लेलें ।
भयानक तोप भी उससे यहाँ बेकार हो जाये ॥
स्वदेशी प्रेम मिल गायें अगर "श्रीराम" भारत में ।
बगीचा हिन्द का सूखा अभी गुलज़ार हो जाये ॥
न बेचें जो रुई अपनी कभी हम हाथ ग़ैरों के ।

बनाना वस्त्र का उनको बहुत दुश्वार हो जाये॥
बचालें द्रव्य जो अपना बिदेशी के लुटेरों से।
अभी निर्धन हमारा देश यह धनवान हो जाये॥

---

# महात्मा गान्धी की शान।

## गाना।

गान्धी ने लेके नाम तेरा जंग को शुरू।
फतह उसके पाँव चूमने को आये ऐ खुदा॥
फूँकी है उसने मुल्क में फिर हुर्रियत की रू।
टूटी तमाम चीख़ उठे हाय ऐ खुदा॥
हिन्दोस्तानियों की गुलामी को दूर कर।
यह आयी है जहाँ से वहां जाये ऐ खुदा॥
तू फ़ज़्ल करके मंज़िल नसरत तक उसकी फौज।
साबरमती से उठके पहुँच जाये ऐ खुदा॥
शैतानकी क्या मज़ाल कि नज़दीक उसके आये।
जब पड़ रहे हैं उस पै तेरे साये ऐ खुदा॥
है उसकी हड्डियों में शरारे दबे हुए।
डालें न उस पे हाथ वायसराय ऐ खुदा॥
शान उसकी देखते ही फ़रिश्ते पुकार उठे।
इस सादगी पै कौन न मर जाये ऐ खुदा॥

---

## चमकता हुआ गान्धी ।

दूर आँखों से हो यह कब है गवारा गान्धी ।
बैठते उठते करें तेरा नज़ारा गाँधी ॥
दिलसे जो से यही अब कहते हैं दौलत वाले ।
है ग़रीबों की ग़रीबी का सहारा गाँधी ॥
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर ।
उनकी आँखों में खटकता है हमारा गाँधी ॥
आफ़तें आईं तेरे सर पै बलायें आईं ।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गाँधी ॥
दिल से जी से वह हमेशा के लिये दास हुआ ।
कर लिया जिसने कभी तेरा नज़ारा गाँधी ॥
जिसको यहां कहता बड़े दर्द के साथ ।
हाय गया आज नज़रबन्द प्यारा गाँधी ॥
सारी दुनिया में ज़माने में पड़े एक हलचल-
तू जो करदे किसी जानिब को इशारा गाँधी ॥
कैद ख़ाने में पड़ा है 'बिसमिल'
देश भारत का चमकता हुआ गाँधी ॥

---

## भगवान बनगया ।

गांधी तू आज हिन्द की एक शान बन गया ।
सारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया ॥
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ त्याग से ।
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बन गया ॥
तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देख कर ।
दुश्मन भी बे ज़बान हैरान बन गया ॥

तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बन गया॥
तू दोस्त है हर क़ौम का हरदिल अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया॥
गो हिन्द आज उठ न सका पायसे तक़दीर।
फिर भी स्वराज लेने का सामान बन गया॥
धिक्कार है भाइयो हमें तेंतिस करोड़ को।
तुझसा फ़क़ीर जेल का महमान बन गया॥

---

## जवानों उठो।

( १ )

माँगती है माता बलिदान !
जवानो, उठो ! देशकी जान !!
सो चुके बहुत खो चुके वीर, देखते हुए देश की पीर।
क्यों न उठते हो अधिक अधीर, गुलामीकी तोड़ो ज़ंजीर॥
क्रान्तिका करो आज आह्वान।
जवानों, उठो ! देशकी जान !!

( २ )

देश हित वाधा-विघ्न ढकेल, बढ़ो, फिर दढ़ कर भरदो जेल।
सदा ही समझो मरना खेल चढ़ो फाँसी पर सुदृढ़ भेल॥
जोश से गावो गौरव-गान !
जवानो उठो देश की जान !!

( ३ )

मर रहे हैं भुक्खों से लोग, फैलते जाते भीषण-रोग।
भोगते श्रमजीवी दुःख भोग, चल रहे हैं झूठे अभियोग॥

मिट रहा प्यारा हिन्दुस्तान!
जवानो उठो! देश को जान!!

( ४ )

बाँधलो सरसे कफ़न सँभाल उठो, फिर ऐ माई के लाल।
मर मिटो छोड़ो सारे ख्याल, न नीचा हो भारत का भाल॥
तुम्हीं तो हो उसके अरमान!
जवानों उठो! देशकी जान!!

— —

## राष्ट्रिय झण्डा।

विश्व विजयी तिरंगा प्यारा झंडा ऊँचा रहे हमारा,
सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम सुधा सरसानेवाला।
वीरों को हरषाने वाला मातृ भूमि का तन मन सारा॥१॥
स्वतंत्रताके भीषण रणमें, लखकर बढ़े जोश क्षण २ में।
काँपे शत्रु देखकर मनमें, मिट जाय भय संकट सारा॥२॥
इस झंडेके नीचे निरभय लें स्वराज हम अविचल निश्चय।
बोलो भारतमाता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा॥३॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्मपर बलि २ जाओ।
एकसाथ सब मिलकर गाओ प्यारा भारत देश हमारा॥४॥
इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलायें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥५॥

---

हर प्रकार की राष्ट्रीय और वैदिक धर्म सम्बन्धी
पुस्तकें मँगाने का एक मात्र पता—
वैदिक पुस्तकालय,
मुरादाबाद।